ISSN : 2454-308X
Volume : 03
Issue : 05

INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
REFEREED | PEER REVIEWED

July - September 2017

उत्तर आधुनिक परिदृश्य और 21वीं सदी की कविता

Poonam
Research Scholar,
Deptt. of Hindi,
Dakshin Bharat Hindi Parchar Sabha,
Chennai (T.N.)INDIA

ABSTRACT

आज समाज में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक क्षेत्र में व्यवस्था का कुचक्र फैल रहा है। राजनेताओं की स्वार्थ लोलुपता, धन–लिप्सा एवं अपराधीकरण के कारण लुप्त मानवीय संवेदना एवं जीवन मूल्यों में गिरावट आती जा रही है। भ्रष्ट राजनीतिक प्रक्षय प्राप्त सामाजिक व्यवस्था में व्यक्ति अकुलाहट, घुटन, संत्रास भरा जीवन जीने के लिए विवश है। लूट, अपराध हिंसा, शोषण, आतंक आदि आर्थिक संपन्नता से उत्पन्न मानवीय मूल्यों को रसातल में ले जाने वाले विविध कारक हैं। बढ़ती जनसंख्या एवं वैज्ञानिक प्रयोग के अतिवाद ने कर्कश कंकरीट के जंगलों का निर्माण कर प्रकृति को विनाश की ओर ले जाने का प्रयास किया है। महानगरों में मानव जीवन मशीनवत परिवर्तित हो गया है, जिसके कारण पारिवारिक व सामाजिक संबंधों में तनाव व विघटन की स्थिति देखने को मिलती है। समाज की इन सब परिस्थितियों का प्रभाव हमें 21वीं सदी की कविता में दिखाई देता है।

KEYWORDS : मानवीय मूल्य, स्वार्थ, मानव जीवन।

उत्तर आधुनिक दौर में यथार्थ की झलक निरन्तर कठिन होती जा रही है। आधुनिकता ने हमारी सभ्यता और संस्कृति के मूल ढाँचे को झकझोर कर रख दिया है। आज नये बाजर भूमंडलीकरण के रूप में फैल रहे हैं। नये साम्राज्यवाद ने ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न कर दी है, जिनमें मूल्यों, आदर्शो, सपनों, स्मृतियों एवं मानवीय गरीमा की बात करने वाला अपने ही लोगों के बीच फालतू और निर्वासित हो जाता है। वर्तमान में व्यक्ति की मानसिकता स्वार्थ केन्द्रित होती जा रही है।

आज की युवा पीढ़ी में भूमंडलीकरण के कारण भौतिक संसाधनों के प्रति जो मोह बढ़ा है, प्रेम को लेकर उनके मन में जो विकृति आई है, धन के पीछे जो अंधी दौड़ उनमें बढ़ी है, उसका उत्तर आधुनिक कविता में बखूबी चित्रण किया गया है। केदारनाथ सिंह, यतीन्द्र मिश्र, कुँवर नारायण, कात्यायनी, कुमरा अंबुद, नीलेश रघुवीर, लीलाधर जगूड़ी, विष्णु नागर, नरेन्द्र जैन, डॉ0 केशवदेव शर्मा, उपेन्द्र कुमार, पंकज राग, राजनारायण बिसारिया आदि 21वीं सदी के अनेकानेक कवियों ने समाज के विभिन्न चित्र उकेरे हैं। लीलाधर जगूड़ी ने उपयोगितावादी दृष्टिकोण को व्यक्त किया है : –

"किसी भी शहर को अब कोई नही जानता उसके इतिहास से,
कोई आने–जाने के भाड़े से जानता है,
कोई उसे जानता है माल के भाव से,
कोई कपड़े के,
कोई जूते के भाव से जानता है।"1

हमारी आज की युवा पीढ़ी पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण करती जा रही है। विवाह व्यवस्था जो कि हमारे समाज में बहुत ही पवित्र मानी जाती थी, उसका रूप विकृत होता जा रहा है। मानवीय जीवन संवेदहीन यंत्रवत होकर रह गया है। अब हर संबंध को उपयोगिता की दृष्टि से देखा जा रहा है और संवेदना के स्तर पर मानव नितांत अकेला है।

"सारे संबंधों को भूला लिया है हमने
मरने से पहले हम इतने अकेले हो गए है।"2

आधुनिकता के इस दौर में भारतीय नारी की विभिन्न स्थितियों को निरूपित किया है। नारी के प्रेमिका रूप के साथ–साथ माता का स्वरूप, पतिव्रता का रूप और घर की कामकाजी महिलाओं के प्रति संवेदना व्यक्त की गई है। इसी संबंध में कुवर नारायण जी की कुछ पंक्तियाँ :–

"वह जो मुँह अंधेरे उठकर
घर के कामकाज में लग गई,
एक बहुत बड़ी छाया है,
जो इस दुनिया पर छाई है"3

आधुनिक विज्ञान ने मनुष्य को प्रगति की असीम ऊँचाईयों तक तो पहुँचा दिया है, लेकिन बदले में जटिल वातावरण भी उसको उपहार स्वरूप दे दिया है। शहरीकरण यान्त्रिकता, आतंकवाद, साम्प्रदायिकता, अकेलापन आदि ने मनुष्य के मस्तिष्क को संकुचित एवं विषाक्त बना दिया है। कवियों के काव्य में यद्यपि नाकारात्मक स्थितियाँ इतनी नहीं है, फिर भी परिस्थितियों की जटिलता से उत्पन्न तनाव की स्थितियाँ उनकी कविताओं में अवश्य देखने को मिलती है।

भौतिकता एवं आधुनिकता के कारण आज का युग मशीनीकरण में तब्दील हो गया है, जिसने मनुष्य की भावनाओं को सारहीन एवं निर्जीव बनाकर रख दिया है। "आँकड़ों की बिमारी" नामक कविता में कवि लिखते हे :–

"एक बार मुझे आंकड़ों की उल्टियाँ होने लगी ..... डॉक्टर ने समझाया
आंकड़ों का वायरस बहुत–बहुत बुरी तरह फैल रहा आजकल.....
आंकड़ों पर कोई दवा काम नहीं करती .....।"4

इतना ही नहीं इस भौतिकता ने मनुष्य को मशीन में बदल दिया है, जिसके पास समय तो है, लेकिन अपने लिये या अपनों के लिए नहीं। आज व्यक्ति एकाकीपन एवं अजनबीपन का शिकार हो चुका है। पारिवारिक एवं नैतिक संबधों का भी ह्रास हो चुका है।

उत्तर आधुनिक युग के कवियों ने अपने काव्य में दलित विमर्श को भी प्रस्तुत किया है। शोषित जन की संवेदना को वाणी देते हुए कवि लिखते हैः–

" मै जानता हूँ तुम धनाढ्य हो,
और मै एक भिखमंगे का सवाल हूँ
हजारों आवाजें, हजारों चुप्पियाँ
बेदर्द यही कहती हैं,
आगे आओ..... यहॉ क्या है,
और मैं मानों, और मैं मानों
अज्ञात दिशा में नए दरवाजों की और एक नाउम्मीद चाल हूँ।"5

21वीं सदी की कविताओं के माध्यम से मानव मन की अंतश्चेतना को उन सच्चाईयों के साथ जोड़ने का प्रयास किया है, जिनके बिना उनकी मानवता का व्यापक स्वरूप नहीं उभर सकता। आज के आदमी के सामने समस्याओं का अंबार लगा हुआ हे, उसकी बैचेनी और अकुलाहट बढ़ती जा रही है। आर्थिक सम्पन्नता हिंसा, लूट, अपराध और आतंक को बढ़ावा देती नजर आ रही है। राजनेताओं की राष्ट्र के प्रति संवेदनहीनता ने जनता को सोचने के लिए विवश कर दिया है। मानव की स्थिति एक मशीनी–यंत्र ही बनकर रह गई है। कहने का मतलब हे कि समाज, संस्कृति, शिक्षा, राजनीति, धर्म–चिंतन, ज्ञान–विज्ञान और दैनिक–जीवन शैली में जिस प्रकार का बदलाव आया है, उससे जो बीज–भाव मानस पटल पर उभरे, उन्हें रूप प्रदान करने का प्रयास 21वीं सदी की कविताओं द्वारा किया गया है।

REFERENCES :

1. **लीलाधर जगूड़ी : ईश्वर की अध्यक्षता में, लखनऊ में लखनऊ, पृ.86**
2. **लीलाधर जगूड़ी : अनुभव के आकाश में चाँद, संशय के संस्थान में मौसम, पृ.41**
3. **कुँवर नारायण : कोई दूसरा नहीं, पृ.106**
4. **सं0 यतीन्द्र मिश्र, कुँवर नारायण : संसार भाग–1, पृ.119**
5. **सं0 यतीन्द्र मिश्र, कुँवर नारायण : संसार भाग–1, पृ.144**